अनुक्रमांक / Roll No.

परीक्षार्थी अपना अनुक्रमांक यहाँ लिखें।
Candidate should write his/her Roll No. here

कुल प्रश्नों की संख्या : 3+3
Total No. of Questions : 3+3

मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 05
No. of Printed Page : 05

PAPER - V
HINDI
सामान्य अध्ययन
10.10.2022

पूर्णांक : 300
Total Marks : 300

1. प्रत्येक खण्ड में कुल तीन प्रश्न है। सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं। प्रश्न क्र. 2 एवं 3 में आंतरिक विकल्प है। प्रश्न क्रमांक 2 में शब्द सीमा 50 है तथा प्रश्न क्रमांक 3 में शब्द सीमा 200 है।
2. प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने अंकित है।
3. प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए, जिसका चयन आपने आवेदन पत्र में किया है। किसी अन्य माध्यम में लिखे गये उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेगा। सभी प्रश्न करना अनिवार्य है।
4. जहाँ शब्द सीमा दी गई है उसका अवश्य पालन करे।
5. प्रश्न पत्र के अनुसार ही प्रश्नों के उत्तर क्रमानुसार दें। एक ही प्रश्न के विभिन्न भागों के उत्तर अनिवार्य रूप से एक साथ ही लिखे जायें तथा उनके बीच अन्य प्रश्नों के उत्तर न लिखे जायें।

KAUTILYA ACADEMY INDORE

प्रश्न : 1 अति लघुउत्तरीय प्रश्न है, प्रत्येक प्रश्न के उत्तर हेतु आदर्श शब्द सीमा 10 शब्द/एक पंक्ति होगी। प्रत्येक प्रश्न 03 अंको का है।

1.1 लिपि किसे कहते है?

1.2 पुरूषवाचक सर्वनाम की परिभाषा लिखिए?

1.3 यमक अलंकार की परिभाषा बताइए?

1.4 अलंकार से क्या तात्पर्य हैं?

1.5 'तरनि तनूजा तट तमाल बहु छाए' यह उक्ति किस अलंकार का उदाहरण है?

1.6 ''तीन बेर खाती सो तीन बैर खाती है'' वाक्य में कौन–सा अलंकार है?

1.7 संधि विच्छेद को परिच्छेद को परिभाषित कीजिए?

1.8 भानूदय का संधि विच्छेद करों?

1.9 यण स्वर संधि उदाहरण सहित समझाइए?

1.10 अविकारी शब्द किसे कहते है?

1.11 पल्लवन की विशेषता लिखिए?

1.12 सामासिक शब्द से क्या तात्पर्य है?

1.13 बहुब्रीहि समास उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए?

1.14 लाटानुप्रास को समझाइए?

1.15 पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किन क्षेत्रों में होता है?

1.16 देशज व विदेशी शब्द।

1.17 लोकोक्ति क्या है?

1.18 वाक्य के प्रकार बताइए?

1.19 आयोगवाह किसे कहते है?

1.20 अवभट्ट क्या है?

प्रश्न : 2 अलंकार से संबंधित प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दीजिए? प्रत्येक प्रश्न 01 अंको का है।

(अ)

(1) 'मार–मारकर दुष्ट दलों को नष्ट किया' इस पंक्ति में कौन–सा अलंकार है?

(2) जब एक वाक्य खण्ड की आवृत्ति बार–बार होती है तो वहाँ किस प्रकार का अलंकार होता है?

(3) ''पूत कपूत तो क्यों धन संचय पूत सपूत तो क्या धन संचय'' ये पंक्तियां कौन–से अलंकार की है?

(4) जब किसी पंक्ति में एक शब्द एक ही बार प्रयोग हुआ हो किन्तु उसका अर्थ दो या अधिक निकले तो वहाँ कौन–सा अलंकार होता है?

(5) 'रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून, पानी गए न उतरे मोती, मानसून, चून।' इन पंक्तियों में कौन–सा अलंकार है।

(ब)

(1) रूपक किस प्रकार का अलंकार है?

(2) ''राम नाम मनि दीप धरू, जीह देहरी द्वार। तुलसी भीतर बाहिरौ, जो चाहत उजियारा।। इन पंक्तियों में कौन–सा अलंकार है?

(3) ''हरि मुख मानो मधुर मयंक'' में कौन–सा अलंकार है?

(4) उत्प्रेक्षा अलंकार के प्रकार स्पष्ट कीजिए?

(5) 'हरि पद कोयल कमल' में कौन–सा अलंकार है?

प्रश्न : 3 वाक्य अनुवाद कीजिए। प्रश्न 11 अंको का है।

(अ)

1. हाल ही में हुई घटनाओं ने दिल्ली को दहला दिया है।
2. विद्रोह करना ही हमारा उद्देश्य नहीं बल्कि सरकार तक अपनी बात पहुँचाना चाहते है।
3. ऐसा लगता है, जैसे भगवान मेरे बहुत पास है।
4. शिक्षा में स्वायत्ता का अर्थ यह नहीं है, कि विश्वविालय विशिष्ट आवश्यकताओं के प्रति ध्यान न दें।
5. भगवान कण–कण में उपस्थित है।

(ब)

1. How cruel i feel was when i was a kid.
2. Every day was a new day of my sin.
3. I would kill birds with a special weapon called "Gulail".
4. It is true that childhood is like a dreem that is be to be broken some or the other day.
5. I jumped into a canal and put my self under water.

प्रश्न : 4 संधि, समाज व विराम चिन्ह् संबंधी प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 02 अंक का है।

1. बड़े–बूढ़े यह किस समास का उदाहण है?
2. 'भालचन्द्र' में कौन–सा समास है?
3. 'नीरज' शब्द में कौन–सी संधि है?
4. 'जगदीश का संधि विच्छेद करों?
5. सम् + धि का संधि कीजिए?

प्रश्न : 5 निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 02 अंक का है।

1. 'सशस्त्र तटस्थता' को अंग्रेजी में लिखिए?
2. Mobocracy का शाब्दिक शब्द हिन्दी में लिखिए?
3. 'कलेजा मुहँ को आना' मुहावरे का अर्थ लिखिए?
4. 'उग्र' का विलोम शब्द लिखिए?
5. 'बार–बार कही गई युक्ति' अनेक शब्दों के लिए एक शब्द बताइए?
6. दही का तत्सम रूप बताइए?
7. आलोचना के तीन पर्यायवाची लिखो?
8. 'कार्तिक' का तत्भव रूप क्या होता है?

9. 'Ledger' का हिन्दी पारिभाषिक रूप क्या है?

10. 'घोषणा पत्र' का अंग्रेजी पारिभाषिक क्या है?

प्रश्न : 6 गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 04 अंक का है।

शिक्षा साध्य नहीं है, वरन किसी लक्ष्य को पाने का साधन है। हम बच्चों को शिक्षा देने के लिए ही शिक्षा नहीं देते। हमारा प्रयोजन होता है, उन्हें जीवन के लिए योग्य और सक्षम बनाना। जैसे ही हम इस सत्य को अच्छी तरह ग्रहण कर लेंगें, वैसे ही यह बात हमारी समझ में आ जायेगी कि महत्वपूर्ण यह है कि हम ऐसी शिक्षा–पद्धति को ही, बिना यह जाँचे हुए कि वह सचमुच उपयुक्त है या नहीं, आगे चलाते चलें।

बहुत से आधुनिक देशों में कुछ समय से यह सोचना एक फैशल बन गया है कि शिक्षा को सबके लिए चाहे वह गरीब हो या अमीर, बुद्धिमान हो या बुद्ध–मुफ्त कर देने से समाज की समस्याएं हल की जा सकती है और एक परिपूर्ण त्रुटिहीन राष्ट्र का निर्माण हो सकता है। पर यह तो हमें आज भी दिखायी पड़ता है कि सबके लिए मुफ्त शिक्षा का प्रबंध कर देना ही काफी नहीं है। पता यह चलता है कि ऐसे देशों में विश्वविद्यालयों के उपाधिधारियों की संख्या उपलब्ध नौकरियों से कहीं अधिक है। अपनी उपाधियों के कारण ये लोग उस काम को अस्वीकार कर देते है, जिसे वे नीचा समझते है। वास्तव में इन लोगों के द्वारा हाथ से किए जाने वाले श्रम के कार्य गंदे और शर्मनाक समझे जाते है। जब हम कहते है कि हमें इस प्रकार शिक्षित किया जाना चाहिए कि हम जीवन के योग्य बन सकें, तो आशय यह होता है कि हमें इस प्रकार से शिक्षित किया जाना चाहिए, कि एक तो हममें से प्रत्येक उन सभी कार्यो के योग्य हो सकें, जो उसकी बुद्धि और क्षमता के अनुरूप हो, दूसरे हम इस बात को मन में स्वीकार कर सकें कि समाज के लिए सभी काम आवश्यक है और अपना काम करने में शर्माना या दूसरे के नाम को नीचा समझना बहुत खराब बात है।

गद्यांश के आधार पर निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. हम यह कैसे कह सकते है कि शिक्षा किसी लक्ष्य को पाने का साधन है?
2. सबके लिए मुफ्त शिक्षा का क्या आशय है?
3. कुछ देशों में सबके लिए मुफ्त शिक्षा की व्यवस्था करने पर क्या परिणाम हुआ है?
4. विश्वविद्यालयों के उपाधिधारी अपने हाथों से काम करने को कैसा समझते है?
5. इस कथन का क्या अर्थ है कि हम सब को जीवन के योग्य बनने के लिए शिक्षा दी जानी चाहिए।

अथवा

मनुष्य उत्सव प्रिय होते है। उत्सवों का एकमात्र उद्देश्य आनन्द प्राप्ति है। यह तो सभी जानते है कि मनुष्य अपनी आवश्यकता की पूर्ति होने पर सभी को सुख मिलता है। पर उस सुख और उत्सव के इस आनन्द में बड़ा अन्तर है, आवश्यकता अभाव सूचित करती है। उससे यह प्रकट होता है कि हममें किस बात की कमी है। मनुष्य जीवन ही ऐसा है, कि वह किसी भी अवस्था में यह अनुभव नहीं कर सकता है कि अब उसके लिए कोई आवश्यकता नहीं रह गई। एक के बाद दूसरी वस्तु की चिंता उसे सताती ही रहती है इसलिए किसी एक आवश्यकता की पूर्ति से उसे जो सुख होता है वह अत्यन्त क्षणिक होता हइै। क्योंकि तुरन्त ही दूसरी आवश्यकता उपस्थित हो जाती है। उत्सव में हम किसी बात की आवश्यकता का अनुभव नहीं करते। यही नहीं उस दिन हम अपने काम–काज छोड़कर विशुद्ध आनन्द की प्राप्ति करते है। यह आनन्द जीवन का आनन्द है काम का नहीं। उस दिन हम अपनी सारी आवश्यकताओं को

भूलकर केवल मनुष्यत्व का ख्याल करते है। उस दिन हम अपनी स्वार्थ–चिंता छोड़ देते है। कर्तव्य भार की उपेक्षा कर देते है, तथा गौरव व सम्मान को भूल जाते है। उस दिन हममें उच्छृंखलता आ जाती है, स्वछन्दता आ जाती है। उस रोज हमारी दिनचर्या बिल्कुल नष्ट हो जाती है। व्यर्थ घूमकर, व्यर्थ कामकर, व्यर्थ खा पी कर हम लोग अपने मन में यह अनुभव करते है कि हम लोग सच्चा आनन्द पा रहे है।

गद्यांश के आधार पर निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(i) उत्सव का उद्देश्य क्या है?

(ii) सुख व आनन्द में अन्तर बताइए?

(iii) मनुष्यतत्व का ख्याल कब अता है?

(iv) मनुष्य कब मन में सच्चा आनन्द का अनुभव करता है।

(v) जीवन का आनन्द किसे कहा गया है।

प्रश्न : 7 दी गई पंक्तियों का भाव पल्ल्वन करों–

(i) ''जिन खोजा तिन पाईया गहरे पानी बैठ।''

अथवा

'प्रेम स्वप्न है, श्रृद्धा जागरण।'

प्रश्न : 8 किसी एक गद्यांश का एक तिहाई शब्दों में संक्षेपण कीजिए– जिस गद्यांश का संक्षेपण कर रहें उसका स्पष्ट उल्लेख उत्तर के प्रारम्भ में अनिवार्यः करें–

(i) साहित्य का आधार जीवन है, इसी नींव पर साहित्य की दीवार खड़ी होती है। उसकी अटारिया, गुम्बद और मीनार बनते है। लेकिन बुनियादें मिट्टी के नीचे दबी पड़ी है। उन्हें देखने को भी जी नहीं चाहेगा। जीवन परमात्मा की सृष्टि है इसलिये अनन्त है, अबोध है, अगम्य है, साहित्य मनुष्य की सृष्टि है इसलिये सुबोध है, सुगम है और मर्यादाओं से परिमित है। जीवन्त परमात्मा को अपने कामों का जवाबदेय है या नहीं। हमें मालूम नहीं। लेकिन साहित्य तो मनुष्य के सामने जवाबदेय है। इसके लिये कानून भी है जिनसे वह इधर–उधर नहीं हो सकता। जीवन का उद्देश्य ही आनन्द है। मनुष्य जीवन पर्यन्त आनन्द की खोज में पड़ा रहता है किसी को आनन्द रत्न द्रव्य में मिलता है किसी को भरे–पूरे परिवार में, किसी को भव्य विशाल भवन में, किसी को ऐश्वर्य और शक्ति में, लेकिन साहित्य का आनंद इससे ऊँचा है। इससे पवित्र है, क्यों उसका आधार सुन्दर और सत्य है। वास्तव में सच्चा आनन्द सुन्दर और सत्य से सही मिलता है। उसी आनन्द को दर्शाना, साहित्य का उद्देश्य है। सुख और वैभव से प्राप्त आनन्द में ग्लानि होती है, पश्चात् भी हो सकता है। किन्तु साहित्य से प्राप्त आनन्द में ऐसा नहीं होता, क्योंकि वह सुन्दर और सत्य है, वह अखण्ड है, अमर है।

अथवा

(ii) हमारे मन की थकावट और ताजगी के लिए हमारी मानसिक स्थिति सबसे अधिक जिम्मेदार है। निराशा हमारा मनुष्य तभी तक मनुष्य है जब तक वह प्रकृति से ऊपर उठने के लिए संघर्ष करता है। यह प्रकृति दो प्रकार की है– आंतरिक और बाह्य। प्रकृति को अपने वश में कर लेना बड़ी अच्छी और गौरव की बात है, पर अंतः प्रकृति पर विजय प्राप्त कर लेना उससे भी अधिक गौरब की बात अमब कमसज। ग्रहों और तारों का नियमन करने वाले नियमों का ज्ञान प्राप्त कर लेना गौरवपूर्ण है पर मानव जाति की वासनाओं, भावनाओं और इच्छा का नियमन करने वाले नियमों को जान लेना उससे अनन्त गुणा अधिक गौरवपूर्ण है।